AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 07 | August 2022| *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 01-06

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 : 21 वी सदी में नैतिक मूल्यो की पुनर्स्थापना के विशेष संदर्भ में

डॉ प्रवीण कुमार गुप्ता
सहायक आचार्य, योग विभाग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, म.प्र

सारांश

शिक्षा किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति का अनिवार्य अंग है! यह मानव मस्तिष्क तथा चरित्र का परिष्कार करती है ! शिक्षा के द्वारा न केवल व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण भी होता है | भारतीय शिक्षा में राष्ट्र विचारधारा का सीधा संबंध भारतीय राष्ट्रीयता से रहा है | सन 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ तब भारत के लोगों ने समझा कि भारतीय शिक्षा में भारतीयता और राष्ट्रीयता स्वाभाविक रूप से महत्व का स्थान ग्रहण करेगी किंतु ऐसा नहीं हुआ हमारी शिक्षा व्यवस्था पूर्णत: पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित रही है भारतीय भावनाओ, मूल्यों, मानको को कोई स्थान नहीं मिला | परंतु अब हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय परंपरा, भारतीय मूल्य और राष्ट्रीयता का अवलंब लिया गया है | इसे देश के सभी शैक्षणिक संस्थानों में क्रियान्वित करने का प्रयास जारी है | जिसके माध्यम से हमारी आने वाली पीढी देश की अस्मिता, उसकी पहचान, तथा परम्परागत मूल्यों एवं परंपराओं से अवगत होंगी | हमारी नई शिक्षा नीति भारत एवं भारतीय ता की भावना से घनीभूत है इसमें हमारे सांस्कृतिक मूल्यों मां को और प्राचीन ज्ञान तथा कौशल को विशेष स्थान दिया गया है युवाओं में नैतिक मूल्यों का तेजी से हो रहे चरण को भी रोकने के उपायों के रूप में नैतिक शिक्षा को महत्व दिया गया है

प्रस्तुत शोध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नैतिक स्वरूप को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है | साथ ही साथ सौहार्द, समन्यव, सास्कृतिक और नैतिक मूल्यो को सामाजिक जीवन में अंगीभूत करने जैसे प्रश्नों को भी विवेचित करने का प्रयास किया गया है | शोध का विषय समसमायिक है क्योकि यह वर्तमान समस्या से जुड़ा है | चुनौतीपूर्ण भी है क्योकि यह २१ वी सदी की समस्त शैक्षिक समस्या के समाधान का प्रयास करता है| इस समसामयिक चुनौतीपूर्ण विषय को दुरुहता से बचते हुए विवेचित करने का प्रयास किया गया है |

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Praveen Kumar Gupta Asst. Professor, Dept. of Yoga Indira Gandhi National Tribal University,M.P. Email: pkggkpup@gmail.com	

कुंजी शब्द - चरित्र निर्माण, अनुशासन, मूल्य सद्भाव, संयम, समावेशी शिक्षा

अध्ययन का उद्देश्य –

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विषय में ज्ञानार्जन |
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों एवं सिद्धांतो के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना |
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीयता एवं राष्ट्रीयता को रेखांकित करना |
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा नैतिक मूल्यों को व्यावारिक जीवन में सफलीभूत बनाने हेतु कुछ सुझाव प्रस्तुत करना |

प्रस्तावना-

२१वीं सदी परिवर्तन की सदी है| ज्ञान विज्ञान सभी क्षेत्रो में तिब्रगामी परिवर्तन हो रहा है| समाज तेजी से बदल रहा है| जानकारी बढ़ रही है, परंतु समझदारी घट रही है| संघर्ष और प्रतियोगिता अपने चरम पर है| प्रतियोगिता प्रतिद्वंदिता में वदल गयी है| सभ्यताओं एवं संस्कृति के बीच टकराव उपस्थित हो गया है| इसी संघर्ष एवं चुनौतियो के बीच भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के क्रियावयन की घोषणा किया गया| स्वतंत्र भारत में इस प्रकार की शिक्षा नीति की आवश्यकता समझी जा रही थी| उसी के परिणाम स्वरुप इसमें नैतिक चरित्र निर्माण को अधिक महत्व दिया गया है| नैतिक मूल्यों को स्थापित किया गया है| इस शिक्षा नीति का उद्देश्य है व्यक्ति में गुणों का विकास करना, व्यक्ति को उत्तम चरित्र एवं विकसित व्यक्तित्व प्रदान करना| चरित्र सामान्यतया मानव का व्यवहार उसकी मूल प्रवृत्तियों आहार, निद्रा, इंद्रिय सुख की इच्छाओ से संचालित होता है किंतु शिक्षा या संस्कार के द्वारा निम्न प्रवृत्तियों का रूपांतरण एवं नियमन करना होता है| मानव - मानव में संघर्ष पर विजय एवं मानव की अंत: प्रकृति पर विजय, नैतिक शिक्षा की द्विध उद्देश्य बन जाते हैं | अत: प्रवृति पर विजय मानव के ह्रदय में उदात्त भावनाओ एवं जीवनादर्श के प्रतिस्थापन्न से होती है|

इस शिक्षा नीति का उद्देश्य धार्मिकता का समावेश, चरित्र का निर्माण, व्यक्तित्व का विकास नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्य का पालन राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार हैं| हमारे धर्म शास्त्रों में व्यक्ति को उसके विनाश के तरफ ले जाने वाले दोषो से सचेत किया गया है वैभव और उन्नति चाहने वाले व्यक्ति को निद्रा,तन्द्रा, डर, क्रोध,आलस्य तथा काम को टालने वाले दोषों का परित्याग करना चाहिए जैसा कि निम्न पक्तियो में कहा गया है-

षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तद्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

- धर्म मीमांसा – 4/7

हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य वैभव ही नही वैश्विक उन्नति प्राप्त करना है अत: इन सूक्ष्म किन्तु महान नैतिक मूल्यों पर भी बल दिया गया है | अपने धर्म एवं संस्कृति के प्रति ज्ञान युक्त श्रद्धा और राष्ट्रभक्ति से प्रेरित व्यक्तियों में नैतिक आचरण की भूमि तैयार होती है| भारतीय चिंतन में मनुष्य का धर्म है अपने हृदय में परमेश्वर की उपस्थिति की अनुभूति करना एवं प्रत्येक प्राणी में परमेश्वर का दर्शन करना सर्वत्र आत्म तादात्म स्थापित करना| यह अंतः करण की निम्न प्रवृत्तियों के नियमन एवं चित्त की शुद्धि से संभव होता है| नैतिक शिक्षा के अंतर्गत मानव मन में यह प्रशिक्षण मुख्य कार्य है इस दृष्टि को विकसित करने के लिए छात्र / छात्राओं को क्रियात्मक अवसर एवं बौद्धिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए तथा व्यावहारिक प्रेरणा भी मिलनी चाहिए | आयु, विद्या, कीर्ति और बल इन चारो में वृद्धि के लिए निम्नलिखित मूल्यों को धरण करना चाहिए |

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन:।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं।।

धर्म मीमांसा – ४/९

व्यक्ति में ऐसा चरित्र निर्माण हो जिनसे वह अपना सुख छोड़कर दूसरों को सुख दे, अपना स्वार्थ छोड़कर परमार्थ करें| और मन वचन या कर्म से किसी को कष्ट न दे | सत्य बोलना, बड़ों का आदर करना, पारस्परिक प्रेम और सम्मान की भावना का विकास, त्याग, दया, न्याय, सहानुभूति, चोरी न करना, धोखा ना देना, साहस निर्भयता आदि सद्गुणों के विकास से ही मनुष्य के चरित्र का निर्माण होता है | महात्मा गांधी जी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि श्रवण कुमार की पितृ भक्ति और राजा हरिश्चंद्र की सत्य निष्ठा हिंदू पौराणिक कथाओं ने मुझे बहुत प्रभावित किया माता - पिता और गुरु की सेवा करने का महत्व बताया है | चरित्र निर्माण भारतीय संस्कृति की सदा धुरी रही है| भारतीय संस्कृति की विशेषता और इसकी महानता का प्रमुख आधार इसके चरित्र निष्ठ नागरिक रहे हैं | चरित्र निर्माण करने वाले दैवी तत्व से भारतीय संस्कृति भरी पड़ी हैं जिस संस्कृति का जीवन दर्शन व्यक्ति में लौकिक एवं पारलौकिक कल्याण को शुद्ध करता है वह जो 'आत्म वत सर्वभूतेषु एवं वसुधैव कुटुंबकम' के आदर्शो की सीख देता है| धर्म में अर्थ एवं काम के आधार पर मोक्ष का मार्ग दिखाता है| पूर्णता का पथ प्रशस्त करता है| जिसमें सेवा और त्याग के आदर्श संस्कारों में गुत्थी की तरह पाए जाते हैं उसकी चरित्र निर्माण मानो विकास की सहज प्रतिक्रिया रही है बाल्मीकि रामायण के अनुसार विद्वान अपनी विद्वता से प्रशंसा के पात्र हो जाते हैं परंतु चरित्रवान मनुष्य अपने चरित्र के आदर्श द्वारा लोगों के लिए श्रद्धान बनकर अपने प्रति आदर भाव उत्पन्न कर उनके हृदय में प्रतिष्ठित हो जाते हैं रामायण में चरित्र से अनुकरणीय अनेकानेक आदर्श पात्र मिलते हैं| पिता के रूप में दशरथ, माता के रूप में कौशल्या, पुत्र के रूप में राम, भाई के रूप में लक्ष्मण, भरत और पत्नी के रूप में माता सीता, समर्पण के रूप में हनुमान सभी अपने अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ते हैं| हमारे उपनिषद् सत्य आचरण के लिये प्रेरित करते है| मुण्डकोपनिषद यह उद्घोष करता है, कि सत्य की ही विजय होती है| हमारे उपनिषद आचरण शास्त्र के ऐसे सर्वभौम मूल्यों को उद्घाटित करते है जिन्हें किसी भी काल उपेक्षित नही किया जा सकता| ये नैतिक मूल्य भारतीय संस्कृति के मूल्यवान धरोहर है|

दर्शन के चरमोत्कर्ष काल में छांदोग्य उपनिषद में ऋषि के स्वर चरित्र निष्ठा के आदर्श को मुखरित करते हुए कहते हैं कि मेरे देश में कहीं कोई चोर कृपाण अग्निहोत्र न करने वाला मूर्ख व्यक्ति निवास नहीं करता था| यही स्थिति इतिहास के स्वर्णिम पन्नो में विघमान था, जब पश्चिमी देश भारत से आशा भरी दृष्टि से सीखने व पाने की इच्छा से पधार रहे थे| 300 ईसा पूर्व मौर्य काल में सेल्यूकस ने सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के शासन में अपने राजदूत मैगनस मेगस्थनीज को पाटलिपुत्र भेजा था| उसने अपनी पुस्तक "इंडिका" में लिखा है कि यहां के लोग अपने घरों में ताला नहीं लगाते थे उनका ज्ञान वैभव अद्भुत गौरवशाली था| भारतीय समाज इमानदारी से रहता था महाभारत के उद्योग पर्व में 132/17 में स्पष्ट वर्णन है कि शासक के चरित्र के उत्थान से ही किसी राष्ट्र की नैतिकता या त्याग एवं तपस्या का पता चलता है| भारत ने ऐसे ही उन अदूरदर्शिता एवं निर्मम शासकों के कारण दासता का सदियों लंबा पीड़ादायक, पराधीनता का समय देखा| लेकिन अब स्थिति बदल रही है भारत अपनी संस्कृति, गौरव गरिमा के साथ विश्व पटल पर प्रतिष्ठित होने की राह पर अग्रसर है| राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से चरित्र निष्ठा का सनातन प्रवाह हमारी धमनियों में प्रवाहित होगी ऐसा हमें विश्वास है | व्यक्तित्व का विकास होगा| भारतीय चिंतन में व्यक्तित्व के भेद अनेक प्रकार से किए गए हैं वात ,प्रधान पित्त एवं कप प्रधान तीन प्रकार के व्यक्तित्व बताए गए हैं जिनके अनुसार उनका स्वभाव, उनका स्वास्थ्य शरीर की बनावट एवं आचरण एवं परिवार

का निर्धारण होता है योग में भी चित् के आधार पर व्यक्तित्व का विभाजन कर मूढ ,क्षिप्त , विक्षिप्त एकाग्र, निरूद्र के भेद से पांच प्रकार के व्यक्तित्व बताए गए हैं| श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित त्रिगुणात्मक प्रकृति के आधार पर व्यक्तित्व के भेद बताए गए हैं सत्व, रज, तम इन तीन गुणों में जिस एक गुण की प्रधानता अन्य दो गुणों की अपेक्षा अधिक होती है वैसा व्यक्तित्व होता है | व्यक्तित्व निर्माण में इन त्रिगुणो का अतिशय महत्व होता है|

गीता में उद्घोष है -

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुन। :
सत्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभि :स्यात्त्रिभिर्गुणै :

- गीता **18/40**

विदेशेषु धनं विद्या व्यसनेषु धनं मति।:
परलोके धनं धर्मशीलं सर्वत्र वै धनम्॥ :
ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।

- सामवेद **11.5.19**

इन तीनो गुणों के आधार पर व्यक्तित्व का निर्धारण होता है इन तीनों गुणों का अनुपात भिन्न भिन्न व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न होता है| इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से भिन्न होता है मानव व्यक्तित्व बहुआयामी होता है| यह भौतिक तत्व आत्म तत्व एवं मन बुद्धि तथा अहंकार का संगठित इकाई होता है| व्यक्तित्व गुणों लक्षणों क्षमताओं आदि की संगठित इकाई है| व्यक्ति संगठित रूप में जो कुछ भी होता है वही उसका व्यक्तित्व कहलाता है व्यक्तित्व का स्वरूप रंग रूप शारीरिक बनावट विचारों के अनुरूप आचरण ज्ञान भाव क्रिया आदि सम्मिलित रूप ही व्यक्तित्व के कारक तत्व है | मानव में व्यक्तित्व निर्माण की सतत प्रक्रिया है| राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं को महत्व देते हुए अभी तकनीकी, चिकित्सा और व्यवसायिक पाठ्यक्रमों सहित अन्य सभी पाठ्यक्रमों में भारतीय भाषा का विकल्प रखा गया है शिक्षकों और अभिभावकों को हर बच्चे के विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृत पहचान कर उनके विकास हेतु संवेदनशील बनाने उसके व्यक्तित्व के विकास एवं उच्च चरित्र निर्माण करने की योजना इस शिक्षा नीति के माध्यम से करने का प्रयास किया गया है| हम जानते हैं की शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय विचारधारा और संस्कृति की विषय सामग्री को सम्मिलित किया गया है| शिक्षा एक संस्कार प्रक्रिया है| मनुष्य अनजाने में ही अपने चारों ओर के समाज से शिक्षा और संस्कार निरंतर ग्रहण करता रहता है| उसमें समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षक का काम करता है| संस्कार यद्यपि दोनों ओर से चलने वाली प्रक्रिया है वस्तुतः मनोविज्ञान के सिद्धांत के अनुसार अनुकरण संवेदना एवं सुझाव आत्म प्रवृत्तियों के कारण समर्थ व्यक्ति की क्रियाएं भी प्रभावी होती हैं माता पिता समाज के परिजन, गुरु जन, मित्र सहपाठी समाज के सभी लोग नवीन पीढ़ियों पर किसी न किसी रूप से संस्कार एवं प्रभाव डालते रहते हैं| अतः हम सभी आमजनों को यह विचार करना चाहिए कि उनकी क्रियाओं का परिणाम केवल उन पर ही नहीं बल्कि दूसरों पर विशेष रूप से नई पीढ़ी पर पड़ता है| शिक्षण संस्थाएं अकेले ही मनुष्य का निर्माण नहीं कर सकती, संस्कार का बहुत प्रभाव शिक्षा संस्थानों के क्षेत्र से बाहर है इसीलिए शिक्षण संस्था एवं बाहर का वातावरण दोनों शुद्ध एवं पवित्र संस्कार में होना चाहिए तभी बालक का संतुलित विकास किया जा सकता है| यदि इन दोनों क्षेत्रों में विरोध रहा तो बालक के जीवन में अंतर्द्वंद खड़ा हो जायेगा, एक समन्वित एकीकृत प्रयास से अखंड व्यक्तित्व का विकास हो पाता है, इसीलिए हमें एक अच्छे नागरिक होने के नाते ही यह ध्यान देना हमारा परम कर्तव्य है कि हम समाज में ऐसा ही आचरण प्रस्तुत करें जिससे समाज में बालकों के अंदर एक अच्छे संस्कार का सृजन हो| नई शिक्षा नीति 2020 वस्तुतः एक प्रकार से बहुआयामी प्रतिभा को उद्घाटित करने की वोध रखती है, और इसे इसी आत्मवोध के साथ क्रियान्वित करने, व्यवहारिक धरातल देने का सद्कर्म किया गया है| नई शिक्षा नीति का लागू होना समय की आवश्यकता और मांग दोनों है| इसके साथ

शिक्षा के प्रति जागरूकता विषय पाठ्यक्रम का होना सबसे ज्यादा जरूरी है| हम जानते हैं कि जीवन में मूल्य और नैतिकता का अत्यधिक महत्व है| मानव का जैसा विचार होगा वैसा ही उसका व्यवहार होगा और उसी अनुरूप वह अपना जीवन व्यतीत करता है| उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को सद्गुण पूर्ण चिंतन करना चाहिए| उसके विचार स्वयं में अच्छा होना चाहिए| यदि किसी व्यक्ति में अकारण अनैतिक,असामाजिक विचार आने लगते हैं तो उसके चिंतन बुरे कर्मों की ओर बढ़ने लगता है| अच्छी शिक्षा हमेशा कुविचारों का समूल नाश करती है| इसीलिए मानव को दुर्गुणों को छोड़कर अच्छे आचरण की शिक्षा को धारण करना चाहिए| मानव के आंतरिक मन में धारणा रही है कि वासना में लिप्त होने वाला व्यक्ति आचरण हीन या अनैतिक है यह एक जीवन की उत्पत्ति की प्रक्रिया है तो उसे हम अनैतिक क्यों और कैसे माने इन समस्याओं का समाधान तो नहीं किया जा सकता| इसमें अंकुश कानून व्यवस्था से लगाया जा सकता है सच तो यह है कि हमारे भारतीय परंपराओं में बहुत से ऐसे संत महात्मा रहे हैं जिन्होंने अपने दार्शनिक चिंतन और कर्म व्यवहार के द्वारा सदैव हमें शिक्षित कर रहे हैं वे आज भी अनुकरणीय है| जैसे आचार्य शंकर,रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, आचार्य तुलसी, गुरु नानक देव, कबीर, महात्मा गांधी, रैदास विशेष अनुकरणीय है| इन संतो ने समाज में एक नई शिक्षा प्रदान की, समय के बदलते स्वरूप में आज भी इनके विचार प्रासंगिक हैं| इसी उद्देश्य को लेकर भारत सरकार ने शिक्षा नीति 2020 में भारतीय मूल्य और परंपराओं का समावेश किया गया है |

निष्कर्ष :-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यालय शिक्षा प्रणाली और समाज संबंधी आवश्यकताओं नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करने का व्यवहारिक तापक्रम किया गया है इसे शैक्षिक तथा सामाजिक दोनों आधारों पर उपयोगी तथा व्यवहारिक बनाने का प्रयास किया गया है साथ ही साथ राष्ट्रीय मूल्यों मान्यताओं एवं आदर्शों को प्राप्त करने के मांगों को स्थापित किया गया है सुख तथा समृद्धि दोनों ही मानव जीवन के लक्ष्य दोनों मानव जीवन के लिए उपयोगी है इसीलिए यह आवश्यक है कि मनुष्य को दोनों प्रकार की शिक्षा प्राप्त हो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इन दोनों महत्वपूर्ण पक्षों का ध्यान रखा गया है स्थान दिया गया है आर्थिक समृद्धि हेतु सैद्धांतिक शिक्षा और व्यवसायिक शिक्षा तथा कौशल विकास को विशेष स्थान दिया गया है जिससे व्यक्ति अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके भौतिक सुख प्राप्त कर सके इसके साथ ही साथ व्यक्ति का आध्यात्मिक उन्नयन भी परम आवश्यक है आध्यात्मिक उन्नयन हेतु नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण की शिक्षा को ज्ञान का मूल आधार माना गया है नैतिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है जीवन में सुख शांति और आनंद अच्छे संस्कार चरित्र और मूल्यों को धारण करने से प्राप्त होते हैं इन मूल्यों को धारण करने हेतु अच्छी शिक्षा की आवश्यकता रहती है चरित्र निर्माण और चारित्रिक समृद्धि राष्ट्र निर्माण तथा राष्ट्र उत्थान के आधार स्तंभ होते हैं राष्ट्रीय शिक्षा नीति इन समस्त मूल्यों को धारण करती है हमारी संस्कृति में मानवीय मूल्यों का अतिशय महत्व है भारत का जीवन मूल्य उदात्त है| विद्या मुक्ति का संधान है| यह मूल्य वोध सतत प्रवाही है| अत: सबका उत्तरदायित्व है कि प्राचीनता के भाव बोध में आधुनिकता के प्रवाह को नूतन आयाम दे| इसे निरंतर आगे ले जाय| इस क्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हमारे लिये पाथेय सिद्ध हो सकती है| भविष्य में इसके दूरगामी परिणाम होगें | यह नैतिक मूल्यों को स्थापित कर भारत को समृद्धशाली राष्ट्र बनाने में सहायक सिद्ध होगी |

संदर्भ :

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० www.education.gov.in
2. गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर 18/40

3. महाभारत , गीता प्रेस, गोरखपुर
4. सामवेद 11/5/9
5. अखण्ड ज्योति, गायत्री परिवार हरिद्वार
6. स्वामी,प्रकाश धर्म मीमांसा मेरठ प्रकाशन, मेरठ १९३६
7. पाण्डेय,गोविन्द चंद, मूल्य मीमांसा, राजस्थान हिंदी ग्रन्ध अकादमिक जयपुर, १९६४ , ६४
8. रंगनाथ, स्वामी, उपनिषद की वाणी, मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम पुल मेरठ,१९७१
9. आत्रेय, डॉ. शांति प्रकाश, योग मनोविज्ञान, दी इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड पब्लिकेशन, वाराणसी, १९६५, ४७
10. सरस्वती, दयानंद, यजुर्वेद भाषा भाष्य, प्रथम भाग राकेश रानी, दयानंद संस्थान नई दिल्ली १९५७, ५०
11. तोमर, लज्जाराम, भारतीय शिक्षा के मूल तत्त्व, सुरुचि प्रकाशन नई दिल्ली २०१४, ५५

■ ■ ■